राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय

स्कूल स्तर गायन एवं स्वर वाद्य पाठ्यक्रम अंक विभाजन

स्वाध्यायी

2020–21

Vid Diploma in performing art- (V.D.P.A.)

Previous

PAPER	SUBJECT VOCAL/INSTRUMENTAL (NONPERCUSSION)	MAX	MIN
1	Theory - 1 Music – Theory	100	33
2	Theory - II Applied Principles of Music	100	33
2	PRACTICAL - II Choice Raga Demonstration & Viva	100	33
	GRAND TOTAL	300	99

Vid Diploma In Performing Art (V.D.P.A.)

प्रथम वर्ष गायन / स्वरवाद्य

प्रथम प्रशन पत्र (संगीत शास्त्र)

समय 3 घण्टे   पूर्णांक : 100

1. ध्वनि (सांगीतिक ध्वनि और शोर) नाद और उसके प्रकार, नाद की तीव्रता तारता गुण कालमान कंपन आवृत्ति कम्पविस्तार डोल उपस्वर
2. सेमीटोन, माईनर टोन, मेजर टोन का परिचय।
3. डायटोनिक स्केल, नेचुरल स्केल, टेम्पर्ड स्केल का सामान्य अध्ययन।
4. हिन्दुस्तानी व कनार्टक सप्तकों का अध्ययन। ग्रह आदि दस राग लक्षणों का परिचय।
5. राग विस्तार में वादी, संवादी, अनुवादी एवं विवादी अल्पत्व, बहुत्व एवं न्यास स्वरों का महत्व।
6. गमक के लक्षण एवं प्रकारों का अध्ययन।
7. भारतीय मतानुसार वाद्य वर्गीकरण का सामान्य परिचय। गायन के परीक्षाथियों के लिये तानपुरा और वाद्य के परीक्षार्थियों के लिये अपने–अपने वाद्य का संक्षिप्त ऐतहासिक अध्ययन।
8. सदारंग–अदारंग, गोपाल नायक, भास्कर बुआ बखले, उस्ताद अब्दुल करीम खॉ, बाबा उस्ताद अलाउद्दीन खॉ, उस्ताद हाफिज अली खॉ, पं. राजा भैया पूछवाले का जीवन परिचय एवं उनका सांगीतिक योगदान।

Vid Diploma In Performing Art (V.D.P.A.)

प्रथम वर्ष गायन/स्वरवाद्य
द्वितीय प्रश्न पत्र (संगीत शास्त्र)
संगीत के क्रियात्मक सिद्धांत

समय 3 घण्टे पूर्णांक : 100

1. पाठ्यक्रम के निम्नलिखित रागों का शास्त्रीय परिचय एवं पिछले पाठ्यक्रमों के रागों से इनका तुलनात्मक अध्ययन। मालकौंस, देशकार, कामोद, रामकली, मारवा, बहार, शंकरा, पूर्वी एवं शुद्धकल्याण मालकौंस।
2. निम्न अ एवं ब को भातखण्डे स्वरलिपि पद्धति मे ंलिखने का अभ्यास।
   (अ) गायन के परीक्षाथियों के लिये – पाठ्यक्रम के रागों में (आलाप तथा तानों साहित) विलम्बित रचना अथवा एक मध्यलय रचना का लेखन एक ध्रुपद, एक धमार (दुगुन और चौगुन) एवं एक तराना।
   (ब) वाद्य के परीक्षार्थियों के लिये – पाठ्यक्रम के रागों में एक–एक विलम्बित गत अथवा एक मसीतखानी गत अथवा मध्यलय अथवा रजाखानी गत (आलाप तथा तानों/तोडों सहित)।
3. मींड, सूत (अनुलोम–विलोम) मुर्की, खटका, घसीट, जमजमा, कृन्तन, गमक, झाला, तोडो, आर्विभाव, तिरोभाव की सामान्य जानकारी। गायन के संदर्भ में आलाप, नोम–तोम का आलाप तथा बोल आलाप एवं स्वर वाद्य के संदर्भ म आलाप, जोड़, झाला का अध्ययन। गायन–वादन में प्रचलित आलापचारी की जानकारी।
4. निम्नलिखित तालों को बोल एवं ताल चिन्ह के साथ ठाह, तिगुन और चौगुन में लेखन। तीनताल, एकताल, चौताल, झपताल, धमार, सूलताल, रूपक, तीव्रा, तिलवाडा, दीपचन्दी, झूमरा एवं आडाचौताल।
5. संगीत से सबंधित विविध विषय पर लगभग 300 शब्दों में निबन्ध लेखन।

Vid Diploma In Performing Art (V.D.P.A.)

प्रथम वर्ष गायन/स्वरवाद्य

प्रायोगिक :– प्रदर्शन एवं मौखिक

समयः– 40 मिनिट पूर्णांक : 100

1. पिछले वर्ष के पाठ्यक्रम की पुनरावृत्ति।
2. पाठ्यक्रम के राग– देशकार कामोद, शंकरा, पूर्वी, शुद्धकल्याण, मारवा, रामकली, बहार एवं मालकौंस।

   (अ) पाठ्यक्रम के रागों में किन्ही चार रागों में विलम्बित ख्याल (आलाप, तानों सहित) अथवा विलम्बित गत अथवा मसीतखानी गत (विस्तृत आलाप, स्थायी, अंतरा, तानों/ताडों तिहाई एवं झाला सहित) का प्रदर्शन।

   (ब) पाठ्यक्रम के प्रत्येक राग में मध्यलय रचना, (आलाप, बोल–तानों एवं तानों सहित) का प्रदर्शन अथवा मध्यलय रचना/रजाखानी गत (आलाप एवं तानों/तोडों तिहाई सहित) का अपने वाद्य पर वादन।

   (स) पाठ्यक्रम के किसी एक राग म ध्रुपद (दुगुन, तिगुन, चौगुन सहित), एक धमार (दुगुन, तिगुन, चौगुन सहित) तथा एक तराना का गायन, अथवा अपने वाद्य पर तीनताल के अतिरिक्त अन्य ताल में एक रचना का आलाप एवं तानों/तोडों तिहाई सहित प्रदर्शन।
3. सुगम संगीत की किसी रचना का स्वरलय में गायन अथवा अपने वाद्य पर प्रदर्षन।
4. पाठ्यक्रम के निम्नलिखित तालों का ताली देकर प्रदर्शन (ठाह, दुगुन व चौगुन साहित) तीनताल, एकताल, चौताल, झपताल, रूपक, तीव्रा, तिलवाडा, दीपचन्दी, झूमरा, आडाचौताल और धमार।

संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दुस्तानी क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 2 से 6 – पं. विष्णु नारायण भातखण्डे
2. संगीत प्रवीण दर्शिका – श्री एल. एन. गुणे
3. राग परिचय भाग 3 से 6 – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
4. संगीत विशारद – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
5. प्रभाकर प्रश्नोत्तरी – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
6. अभिनव गीतांजलि भाग 1 से 5 – पं. श्री रामाश्रय झा
7. संगीत बोध – श्री शरदचन्द्र पराजंपे
8. वाद्य वर्गीकरण – श्री लालमणि मिश्र
9. हमारे संगीत रत्न – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
10. चतुरंग – श्री सज्जनलाल भट्ट
11. संगीत शास्त्र – श्री तुलसीराम देवागंन

Vid Diploma in performing art- (V.D.P.A.)

Final

PAPER	SUBJECT VOCAL/INSTRUMENTAL (NONPERCUSSION)	MAX	MIN
1	Theory - 1 Music – Theory	100	33
2	Theory - II Applied Principles of Music	100	33
3	PRACTICAL - II Choice Raga Demonstration & Viva	100	33
	GRAND TOTAL	300	99

16.

Vid Diploma In Performing Art (V.D.P.A.)

अंतिम वर्ष गायन/स्वरवाद्य

प्रथम प्रश्न पत्र (संगीतशास्त्र)

समय 3 घण्टे पूर्णांक : 100

1. गाधंर्व गान एवं मार्ग–देशी का सामान्य परिचय।
2. निबद्ध एवं अनिबद्ध गान की सामान्य जानकारी एवं अनिबद्ध के अंतर्गत रागालाप्ति और रूपकालाप्ति के भेद–प्रभेदों का अध्ययन।
3. भरत के श्रुति निदर्शन की चतु:सारणा का परिचय।
4. वीणा के तार पर पं. अहोबल द्वारा शुद्ध–विकृत स्वरों की स्थापना और पं. श्रीनिवास द्वारा उनका स्पष्टीकरण।
5. थाट राग वर्गीकरण का सामान्य परिचय। शुद्ध, छायालग एवं संकीर्ण रागों का वर्गीकरण समय–सिद्धांत के अनुसार रागों का वर्गीकरण।
6. गणितानुसार हिन्दुस्तानी संगीत के 32 और कनार्टक संगीत के 72 मेलों की निर्माण विधि स्वरों की संख्या के आधार पर एक थाट से 484 राग बनान की विधि।
7. जीवनियॉ एवं सांगितिक योगदान :– उस्ताद फैयाज खॉ, उस्ताद बडे गुलाम अली खॉ, पं. ओमकारनाथ ठाकुर, पं. रविशंकर, उ. बिस्मिल्लाह खॉ।

Vid Diploma In Performing Art (V.D.P.A.)

अंतिम वर्ष गायन/स्वरवाद्य

द्वितीय प्रश्न पत्र

संगीत के क्रियात्मक सिद्धांत

समय 3 घण्टे पूर्णांक : 100

1. पाठ्यक्रम के निम्नलिखित रागों का शास्त्रीय परिचय एवं पिछले पाठ्यक्रमों के रागों से तुलनात्मक अध्ययन :– छायानट, पूरियाधनाश्री, जयजयवन्ती, वसंत, सोहनी, पूरिया, ललित, गौडसारंग एवं कालिंगडा।
2. निम्न अ एवं ब को भातखण्डे स्वरलिपि पद्धति में लिखने का अभ्यास।
   (अ) गायन के परीक्षार्थियों के लिये :– पाठ्यक्रम के चार में आलाप तथा तानों सहित विलम्बित रचना का लेखन। पाठ्यक्रम के प्रत्यके रागों में एक मध्यलय रचना का (आलाप तथा तानों सहित) लेखन एक ध्रुपद, एक धमार (दुगुन, तिगुन एवं चौगुन सहित) एवं एक तराना का स्वरलिपि में लेखन
   (ब) स्वर वाद्य के परीक्षार्थियों के लिये :– पाठ्यक्रम के रागों में एक–एक विलम्बित गत अथवा मसीतखानी गत (आलाप, तानों, तोडो सहित) तथा एक मध्यलय अथवा रजाखानी गत (आलाप, तानों, तोडों सहित) का लेखन।
3. आड, कुआड एवं बिआड की परिभाषा व परिचय।
4. तीनताल, दादरा, कहरवा, झपताल एवं एकताल के ठेकों को आड की लयकारी (3/2) में लिखने का अभ्यास।
5. स्वरलिपि एवं उसकी उपयोगिता। भारत में प्रचलित स्वरलिपियों का सामान्य ज्ञान।
6. संगीत से सबंधित विविध विषयों पर लगभग 500 शब्दों में निबंध लेखन।

Vid Diploma In Performing Art (V.D.P.A.)

अंतिम वर्ष गायन / स्वरवाद्य

प्रायोगिक :– प्रदर्शन एवं मौखिक

समयः– 40 मिनिट पूर्णांक : 100

1. पिछले वर्ष के पाठ्यक्रम की पुनरावृत्ति।
2. पाठ्यक्रम के राग –छायानट, पूरियाधनाश्री, जयजयवन्ती, वसंत, गौडसारंग, सोहनी, पूरिया, ललित एवं कालिंगडा।

   (अ) पाठ्यक्रम के रागों में किन्हीं चार रागों में विलम्बित ख्याल (आलाप, तानों सहित) अथवा विलम्बित गत/अथवा मसीतखानी गत (विस्तृत आलाप, स्थायी, अंतरा, तानों/ताडों सहित) का प्रदर्शन।

   (ब) पाठ्यक्रम के पत्येक राग में मध्यलय रचना ख्याल (आलाप, बोल तानों एवं तानों सहित) का प्रदशर्न अथवा मध्यलय रचना/रजाखानी गत (आलाप एवं तानों/तोडों, तिहाई सहित) का अभ्यास।

   (स) पाठ्यक्रम के किसी एक राग में ध्रुपद (दुगुन, तिगुन चौगुन एवं छःगुन सहित) एक धमार (दुगुन एवं चागुन सहित) एक तराने का गायन अथवा अपने वाद्य पर तीनताल से भिन्न पृथक अन्य ताल में एक रचना का आलाप एवं तानों/तोडों, तिहाई सहित प्रदर्शन।
3. किसी सुगम संगीत की रचना का स्वर लय में गायन अथवा अपने वाद्य पर प्रदर्शन।
4. पाठ्यक्रम के निम्नलिखित तालों का हाथ से ताली देकर प्रदर्शन :–

   (अ) तीनताल, कहरवा, दादरा, एकताल, चौताल का ठाह और चौगुन सहित प्रदर्शन।

   (ब) झपताल, रूपक, तीव्रा, तिलवाडा, दीपचन्दी, झूमरा, आडाचौताल और धमार का ठाह व चौगुन में प्रदर्शन।

संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दुस्तानी क्रमिक पुस्तक मालिका भाग 2 से 6 – पं. विष्णु नारायण भातखण्डे
2. संगीत प्रवीण दर्शिका – श्री एल. एन. गुणे
3. राग परिचय भाग 3 से 6 – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
4. संगीत विशारद – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
5. प्रभाकर प्रश्नोत्तरी – श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
6. अभिनव गीतांजलि भाग 1 से 5 – पं. श्री रामाश्रय झा
7. संगीत बोध – श्री शरदचन्द्र पराजंपे
8. वाद्य वर्गीकरण – श्री लालमणि मिश्र
9. हमारे संगीत रत्न – श्री लक्ष्मीनारायण गर्ग
10. चतुरंग – श्री सज्जनलाल भट्ट
11. संगीत शास्त्र – श्री तुलसीराम देवागंन